गुजरात का गौरव : आनंद कृषि विश्वविद्यालय ने 'डगरी' गाय की नई नस्ल को दिलवाई राष्ट्रीय पहचान

डॉ. के. बी. कथीरीया, कुलपतिश्री, आनंद कृषि विश्वविद्यालय, आनंद -३८८११०
एवम
डॉ. आशीष सी. पटेल ,डॉ. डी. एन. रांक और डॉ. आर. एस.जोशी
फोनः (ओ) ०२६९२-२६१२७३

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अंतर्गत आने वाले राष्ट्रीय पशु अनुवांशिक संसाधन ब्यूरो NBAGR, करनाल, हरियाणा देश में अलग अलग पशुओं के नस्ल के पंजीकरण का कार्य नोडल एजेंसी की तरह कर रही है।

यह कार्य करने के लिये एक नस्ल पंजीकरण समिति का गठन आई.सी.ए.आर. द्वारा उप–महानिदेशक (पशु विज्ञान) की अध्यक्षता में २४ जनवरी २०२० को आयोजित बैठक में की गई थी। इस बैठक में गुजरात से पंजीकरण के लिये डॉ. के. बी. कथीरिया, सेवा निवृत, निदेशक अनुसंधान और मौजूदा गुजरात सरकार द्वारा नव नियुक्त कुलपति, आनंद कृषि विश्वविद्यालय, आनंद के सीधे मार्गदर्शन में वैज्ञानिकों और राज्य के पशुपालन विभाग के

कर्मचारियों की मदद से पर्वतीय नस्ल की मान्यता लेने के लिये तैयार किया हुआ आवेदन तारीख ३१.१२.२०१८ के दिन NBAGR को सौंपी थी। इस आवेदन की तमाम प्रक्रियाओं से गुजरने के बाद जाँच समिति द्वारा 'डगरी' गाय की नई नस्ल को मान्यता दी गई। जिसका पंजीकरण क्रमांक INDIA_CATTLE_0400_DAGRI_03046 है।

मौजूदा समय में भारत में गाय की पचास किस्में है, जिसमें से गुजरात में 'गीर', 'कांकरेज', और डांगी के बाद अब 'डगरी' भी शामिल हो गई। गुजरात राज्य पशुधन और जैव विविधता में बहुत समृद्व है और अभी तक भारत की पशुओं की कुल १७५ नस्लों में से २४ नस्लें गुजरात ने दी है।

गुजरात की गीर गाय को दूध उत्पादन के लिये गुजरात और भारत में ही नही बल्कि विश्व में प्रसिद्ध मिली है। जहां कि कांकरेज गाय दूध के लिये वही बैल खेती के कार्यों में अधिक भारवहन करने की क्षमता के लिये प्रसिद्ध है।

डगरी गाय की पहचान की शुरूआत वर्ष २०१५ में डॉ. के. बी. कथीरीया द्वारा हुई जब वो २०११–२०१६ तक अनुसंधान निदेशक के पद पर थें तब मध्य गुजरात के अलग अलग जिलों के विविध संशोधन केन्द्रों खासकर गोधरा, दाहोद, छोटा उदयपुर और उसके विस्तार में भ्रमण के लिये जाते थे। उनका विषय पादप प्रजनन एवं अनुवांशिकी होने के कारण वो वनस्पति के साथ साथ पशुओं की प्रजनन के संबंध में भी बहुत रूची रखते थे और प्रजनन के ज्ञान का उपयोग वनस्पति तथा पशुओं के क्षेत्र में बहुत अच्छी तरह किया जा सके उसके लिये वो हमेशा तत्पर रहते थें। इन क्षेत्रों के भ्रमण के दरमयान किसानों द्वारा पाली जाने वाली गायों और बैलों तथा रास्ते में चरती हुई गायों के झुंड को ध्यान से देखते थे और उन्होनें गौर किया कि कुछ गायों और बैलों की संताने उनकी दूसरी संतानों से भिन्न थी। इस बात को ध्यान में रखते हुये वर्ष २०१६–२०१७ में इस गाय के बाहरी और अनुवांशिक लक्षणों के

आधार पर निस्त्रपण डॉ. डी. ऐन रांक, डॉ. आर. एस. जोशी, डॉ. ऐ. सी. पटेल पशु अनुवांशिकी एवं प्रजनन विभाग, वेटरनरी महाविद्यालय के मार्गदर्शन में शुरू किया गया।

इस कार्य में डॉ. डी. सी. पटेल, प्रोफेसर पशुपोषण विभाग तथा डॉ. ऐ. एम. ठाकर, सेवानिवृत प्राचार्य एवं अधिष्ठाता तथा डॉ. ऐम. के. झाला सह संशोधना निदेशक का भी सहयोग और मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

डगरी गाय का क्षेत्र तथा उनकी संख्या

वर्ष २०१६–२०१७ के दौरान उन क्षेत्रों का सर्वेक्षण किया गया जहां डगरी गाय पाई जाती हैं। सर्वेक्षण के दौरान इन गायों की संख्या मुख्य रूप से दाहोद, छोटा उदयपुर और कुछ हद तक पंचमहल, महीसागर और नर्मदा जिलों में पायी गयी। इन जिलों में भारत सरकार द्वारा कराई गई १९वीं पशुधन संगणना के अनुसार पशुओं की संख्या लगभग २,८२,४०३ जितनी थी। इस पूरे क्षेत्र में आदिवासी बाहुल्य जिलें हैं। इस क्षेत्र की भौगोलिक परिस्थिति देखें तो अधिकांश क्षेत्र पहाड़ी है। जहां बारिश के मौसम में अच्छी बरसात होती है। हालांकि गर्मी के मौसम में पहाड़ी और चट्टानी इलाकों के कारण कूँआ/नहरों के माध्यम से सिंचाई की सुविधा नगन्य है और मवेशी सूखे चारों पर निर्भर करते हैं और विशेष रूप से बारिश के मौसम को छोड़ कर चराई पर निर्भर हैं।

गाय की बाहरी विषेषताओं का निस्त्रपण

गाय की नई नस्ल की पहचान के लिये निर्धारित मानदंडो का उपयोग करते हुये लगभग २०० से अधिक गायों की शारीरिक विशेषताओं जैसे रंग, माथे की लम्बाई और चौड़ाई, सींग की लम्बाई और गोलाई, शरीर की लम्बाई और ऊंचाई, पूंछ की लम्बाई आदि विशेषताओं का अध्ययन किया गया था। उपरोक्त लक्षणों के अध्ययन के दौरान यह पाया गया कि 'डगरी' गाय की इस नई नस्ल का रंग या तो पूर्ण रूप से सफेद होता है अथवा सफेद रंग के

साथ आगे और पीछे के पैरों पर भूरे रंग के धब्बे होते हैं।

जबकि कुछ गायों में सफेद रंग के साथ लालिमा दिखने को मिलती हैं। इस गाय के सींग पतले, ऊपर की ओर घुमावदार और सीरा नुकीला होता है। इस गाय के कान सीधे और खुले होते है ।

छोटी कद, पतले और छोटे पैर इस गाय की मुख्य विशेषता होती है। यह गाय काफी चंचल और शरारती होती है। आमतौर पर गाय का वजन १५० किलो ग्राम होता है और दुधारू गाय ३००–४०० किलोग्राम जितना दूध देती है। इस क्षेत्र में गायों का महत्व दूध देने के अलावा उनके बछड़ो को बैलों के रूप में खेती के उपयोग में लाने का भी है। क्योंकि इन बैलों का उपयोग पहाड़ी क्षेत्रों के साथ साथ उच्च और ढलान वाली भूमि में खेती के लिये किया जाता है। आदिवासी जनजाती वाले इन इलाकों में अधिकतर खेती बैलों की सहायता से ही की जाती है। इस नस्ल के बैल छोटे कद और कम वजनी होने के कारण इस क्षेत्र में खेती के लिये काफी उत्तम साबित होते हैं। इतना ही नही हरे और सूखे चारों की उपलब्धता को ध्यान में रखते हुये यह नस्ल अधिक उपयुक्त है क्योंकि नस्ल को कम चारे की आवश्यकता होती है।

खुराक और पालन–पोषण

आमतौर पर रात के समय इस नस्ल के पशुओं को घर से लगे छत, कच्ची मिट्टी की दीवारों से बने फूस की झोपड़ियों या खुले स्थानों पर रखा जाता है। इन पशुओं को बारिश के दौरान सुबह से शाम तक खुले चारागाहों में चराया जाता है ताकि उन्हें हरा चारा मिल सके। रात के समय आमतौर पर सुखा चारा दिया जाता है और अगर जरूरत पड़े तो हरा चारा भी दिया जाता है। बारिश के बाद पहाड़ी इलाकों में उगी हुई घास को काटकर पूरे साल के लिये संग्रहित किया जाता है। सर्दी और गर्मी के मौसम में सुबह अथवा पूरे दिन पशुओं को चराते रहते हैं। इसके अलावा किसान खेत में बोए मक्का,ज्वार बाजरा की कटाई के बाद सूखे पौधों को चारे के रूप में

खिलाते हैं । सामान्यतः किसान गायों की अपेक्षा बैलों का ज्यादा ध्यान रखते हैं।

दूध उत्पादन

ब्यांत के शुरूआत में अधिकांश दूध बछड़ो को पिलाने के उपयोग में लिया जाता है। सामान्यतः गाय का प्रतिदिन दूध उत्पादन १.५–२ कि.ग्रा. तथा पूरे ब्यांत के दौरान ३००–४०० कि. ग्रा. होता है। कम दूध उत्पादन का मुख्य कारण असंतुलित आहार, सूखे चारे का उपयोग तथा पशुओं के मुख्य रूप से चरने पर निर्भर होने के कारण है।

इस नस्ल में विपरीत परिस्थितियों में भी अच्छी तरह से टिके रहने की क्षमता होती है। इसके अलावा इन पशुओं के खुरपका, मुँहपका रोग तथा अन्य रोगों के प्रति रोग रोधक क्षमता अधिक होती है। स्थानीय किसानों से पूछने पर मालूम चला कि इन नस्लों में रोग व्याधि कम होती है।

इस नई नस्ल को मान्यता मिलना और साथ ही साथ इसका प्रचार प्रसार बहुत आवश्यक है। यदि संभव हो तो खास तौर पर इसके लिये ऊँची गुणवत्ता रखने वाली नर एवं मादा पशुओं को संग्राहित कर उसमें से ऊँची गुणवत्ता रखने वाली गायों तथा साँड का उपयोग कृत्रिम गर्मधारण अथवा प्राकृतिक प्रजनन के लिये उपयोग किया जा सकता है और इस तरह से भविष्य में लम्बे समय के लिये इन क्षेत्रों में 'डगरी' गाय की नस्लों में अनुवांशिक सुधार होने से दूध उत्पादन क्षमता में भी विकास होगा और अच्छी गुणवत्ता के बैल भी मिल सकेंगें।

खासकर यह ध्यान में रखना जरूरी है कि इन क्षेत्रों में डगरी गाय का अन्य नस्लों के साथ प्राकृतिक या कृत्रिम गर्भाधान नही होना चाहिये । जिससे कि इस नस्ल की शुद्वता कायम रखते हुये इस क्षेत्र में इसकी अधिक से अधिक संख्या संरक्षित रहें।

खिलाते हैं । सामान्यतः किसान गायों की अपेक्षा बैलों का ज्यादा ध्यान रखते हैं।

दूध उत्पादन

ब्यांत के शुरूआत में अधिकांश दूध बछड़ो को पिलाने के उपयोग में लिया जाता है। सामान्यतः गाय का प्रतिदिन दूध उत्पादन १.५–२ कि.ग्रा. तथा पूरे ब्यांत के दौरान ३००–४०० कि. ग्रा. होता है। कम दूध उत्पादन का मुख्य कारण असंतुलित आहार, सूखे चारे का उपयोग तथा पशुओं के मुख्य रूप से चरने पर निर्भर होने के कारण है।

इस नस्ल में विपरीत परिस्थितियों में भी अच्छी तरह से टिके रहने की क्षमता होती है। इसके अलावा इन पशुओं के खुरपका, मुँहपका रोग तथा अन्य रोगों के प्रति रोग रोधक क्षमता अधिक होती है। स्थानीय किसानों से पूछने पर मालूम चला कि इन नस्लों में रोग व्याधि कम होती है।

इस नई नस्ल को मान्यता मिलना और साथ ही साथ इसका प्रचार प्रसार बहुत आवश्यक है। यदि संभव हो तो खास तौर पर इसके लिये ऊँची गुणवत्ता रखने वाली नर एवं मादा पशुओं को संग्राहित कर उसमें से ऊँची गुणवत्ता रखने वाली गायों तथा साँड का उपयोग कृत्रिम गर्मधारण अथवा प्राकृतिक प्रजनन के लिये उपयोग किया जा सकता है और इस तरह से भविष्य में लम्बे समय के लिये इन क्षेत्रों में 'डगरी' गाय की नस्लों में अनुवांशिक सुधार होने से दूध उत्पादन क्षमता में भी विकास होगा और अच्छी गुणवत्ता के बैल भी मिल सकेंगें।

खासकर यह ध्यान में रखना जरूरी है कि इन क्षेत्रों में डगरी गाय का अन्य नस्लों के साथ प्राकृतिक या कृत्रिम गर्भाधान नही होना चाहिये । जिससे कि इस नस्ल की शुद्वता कायम रखते हुये इस क्षेत्र में इसकी अधिक से अधिक संख्या संरक्षित रहें।